IJAER/Nov-Dec 2022/Volume-11/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

मानवीय समाज और पर्यावरण का एक भौगोलिक अध्ययन,

Yogendra Singh

Assistant Professor

Deptt of Geography

Govt.Girls College Jhalatala.Weir, Bharatpur. Raj

सारांश, पर्यावरण और जैव–भौतिकीय दुनिया की गतिशीलता के साथ उनकी अंतःक्रियाओं में मानव–सामाजिक स्थितियों के गहन विश्लेषण को एकीकृत करता है, इसे पर्यावरण, प्रकृति–समाज और पर्यावरण और समाज भूगोल (कैस्ट्री,) के रूप में भी जाना जाता है। अनुशासन के मानव–पर्यावरण विभाजन को एकीकृत करके, ज्ञान के यह रूप अन्य उपक्षेत्रों (जिमरर) के सापेक्ष अलग हैं। मानव–पर्यावरण भूगोल अक्सर वैचारिक रूपरेखाओं और मॉडलों के माध्यम से सूचना के संश्लेषण के साथ गहन अनुभवजन्य अनुसंधान को जोड़ता है। मानव–पर्यावरण भूगोल के नेताओं में से एक, बी.एल. टर्नर II ने इस परिभाषित विशेषता को विशेषज्ञ–संश्लेषण विलय के रूप में संदर्भित किया है। (टर्नर के कार्य, और अन्य लोगों के कार्य, मानव–पर्यावरण भूगोल में डेश के उपयोग को स्थापित करते हैं।) भूगोल में मानव–पर्यावरण अध्ययन का क्षेत्र सक्रिय रूप से विकसित हो रहे दृष्टिकोणों और रुचियों की एक विविध श्रृंखला को शामिल करता है। इस क्षेत्र में नई ज्ञान प्रणालियों की विविधता और गहराई, भूगोल के अंतर्राष्ट्रीय विश्वकोश के तेज होने के बीच बढ़ रही है। डगलस रिचर्डसन, नोएल कास्ट्री, माइकल एफ. गुडचाइल्ड, ऑड्रे कोबायाशी, वेइदोंग लियू और रिचर्ड ए द्वारा संपादित। मानव समाजों और पर्यावरणों के अंतःक्रियाएं और जटिल नए संबंध।

प्रस्तावना, वर्तमान समय में मानव–पर्यावरण अंतःक्रियाओं की त्वरित तीव्रता और संभावित रूप से नए रूप स्पष्ट परिवर्तन के साथ–साथ इस उपक्षेत्र के विस्तारित महत्व का संकेत हैं। इन प्रवृत्तियों के परिणाम स्वरूप सामयिक और विषयगत रुचि के में और मजबूती आ रही है और साथ ही नए मुद्दों और दृष्टिकोणों का उदय भी हो रहा है। मानव–पर्यावरण भूगोल के वर्तमान चरण को प्रभावित करने वाले कारकों में नवउदारवादी वैश्वीकरण, शहरीकरण, वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन (जैसे, जैव विविधता हानि, जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा मुद्दे), औद्योगिक पारिस्थितिकी (जैसे, ऊर्जा और खनन), जनसंख्या गतिशीलता जिसमें जनसांख्यिकीय कारकों का आकार, आंदोलन और लिंग निर्धारण (जैसे, प्रवास), तथाकथित पर्यावरण सुरक्षा की राजनीति और पर्यावरण से संबंधित नागरिकता और सामाजिक आंदोलनों का विकास शामिल है। वर्तमान परिवर्तनों पर प्रतिक्रिया करने वाले कई मानव–पर्यावरण दृष्टिकोणों को मिश्रित अध्ययन और संकर विज्ञान कहा जाता है। ये ज्ञान प्रणालियाँ मानव–पर्यावरण अध्ययन के कई क्षेत्रों में सूचना, विश्लेषण और व्याख्या को

संश्लेषित कर रही हैं। इस तरह के मिश्रित मानव–पर्यावरण अध्ययन अत्याधुनिक ज्ञान की विशेषता हैं और कुछ हद तक एंथ्रोपोसीन में सामना किए जा रहे पर्यावरणीय मुद्दों की अभूतपूर्व सामाजिक तात्कालिकता और जटिलता की प्रतिक्रिया हैं। एंथ्रोपोसीन एक ऐसा शब्द है जिस पर प्रमुख वैज्ञानिक संस्थान (जैसे लंदन की जियोलॉजिक सोसायटी और अमेरिका की जियोलॉजिक सोसायटी) विचार कर रहे हैं, ताकि पृथ्वी के पर्यावरण पर मानवीय प्रभावों के परिमाण के माध्यम से पहचाने जाने वाले नए भूगर्भिक युग को चिन्हित किया जा सके। एंथ्रोपोसीन शब्द पर्यावरणीय सीमाओं को भी दर्शाता है, जिसमें यह अनुमान लगाया गया है कि आठ सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक पर्यावरणीय प्रणालियों में से तीन वर्तमान में मानवीय गतिविधियों के परिणाम स्वरूप ग्रहीय स्थिरता (जैव विविधता, जलवायु और नाइट्रोजन चक्र) की सीमाओं के करीब हैं या उससे आगे निकल गए हैं। कम से कम कुछ अन्य, अर्थात् जल और भूमि उपयोग, ग्रहीय पर्यावरणीय सीमाओं के काफी करीब हैं। अंतिम नामकरण संबंधी निर्णय के बावजूद – चाहे एंथ्रोपोसीन शब्द को आधिकारिक तौर पर वर्तमान भूगर्भिक युग (यानी, होलोसीन युग का अनुसरण करने के लिए) को निरूपित करने के लिए नामित किया गया हो या नहीं – यह स्पष्ट है कि मानव–पर्यावरण अंतःक्रियाओं के दायरे ने महत्व प्राप्त कर लिया है। उपर्युक्त कारकों के परिणाम स्वरूप, समकालीन भूगोल के भीतर मानव–पर्यावरण जांच और समझ के मौजूदा तत्व विविध और गतिशील हैं। एक साथ लिया जाए, तो ये मानव–पर्यावरण दृष्टिकोण नौ पहचान योग्य नोड्स में समूहीकृत हैं। भूगोल में इस विस्तृत मानव–पर्यावरण क्षेत्र की रूपरेखा मुख्य रूप से अनुसंधान और विद्वत्ता के माध्यम से आकार लेती है। इन नौ नोड्स के एकीकरण में अन्य प्रभावों में कई पैमानों पर वास्तविक दुनिया पर्यावरण शासन का विश्लेषण और कार्यान्वयन, संसाधन प्रबंधन के लिए व्यावहारिक अनुप्रयोग, और पर्यावरण सक्रियता और सार्वजनिक जागरूकता शामिल हैं। रुचि, विचार, बहस और अभ्यास की यह वृद्धि मानव–पर्यावरण ज्ञान प्रणालियों की सीमा को बदल रही है क्योंकि वे भूगोल से परे चल रहे परिवर्तनों का जवाब देना चाहते हैं। वर्तमान में मानव–पर्यावरण भूगोल के विभिन्न हिस्सों को नया रूप देने वाले प्रमुख प्रभाव अकादमी में पोस्टस्ट्रक्चरल सिद्धांत के महत्वपूर्ण पुनर्गठन से लेकर प्रमुख सामाजिक चुनौतियों और अनिश्चितता को जन्म देने वाले मानवजनित पर्यावरणीय परिवर्तनों के संचयी प्रभावों तक हैं। इन प्रभावों की रूपरेखा का पता लगाना मानव–पर्यावरण विज्ञान और छात्रवृत्ति के महत्वपूर्ण विस्तार और विविधीकरण के साथ शुरू हो सकता है, जो 1960 के दशक के दौरान अकादमी के पुनर्गठन के माध्यम से हुआ था।

वर्तमान में इनमें अकादमिक पुनर्गठन शक्तिशाली अंतःविषय क्षेत्रों के प्रभावशाली विस्तार और समेकन को संदर्भित करता है, जैसे कि पर्यावरण अध्ययन, पर्यावरण विज्ञान (स्थिरता विज्ञान जैसे शाखाओं सहित), और सामाजिक विश्लेषण को शामिल करने वाले पारिस्थितिक दृष्टिकोण और साथ ही अनुसंधान निधि की संरचना और संगठन में सहवर्ती परिवर्तन। ये अकादमिक बदलाव हाल ही में उभरे नए मिश्रित दृष्टिकोण और मानव–पर्यावरण भूगोल में विशेषज्ञता के दोनों को आगे बढ़ा रहे हैं। वर्तमान मानव–पर्यावरण भूगोल की रूपरेखा का अकादमिक सीमाओं के बाहर भी महत्वपूर्ण प्रभाव है। ये प्रभाव जैव–भौतिकीय प्रणालियों (जैसे, जलवायु परिवर्तन, महासागर अम्लीकरण, पानी की कमी और तूफान की तीव्रता) से जुड़े अचानक, सामाजिक रूप से विघटनकारी पर्यावरणीय परिवर्तनों के बारे में बढ़ती जागरूकता से उत्पन्न होते हैं। जैव–भौतिकीयष एक उपयुक्त शब्द है जो जैव–भौगोलिक, भू–प्रणाली और भौतिक भौगोलिक कारकों

से बने पर्यावरण के दृष्टिकोण को दर्शाता है। पर्यावरण से संबंधित मानव–सामाजिक प्रयासों की नीति, राजनीति और सामाजिक मुद्दों से शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न होते हैं। मानव–पर्यावरण भूगोल के हालिया रुझान गतिशील जैव–भौतिकीय परिवर्तनों को स्थान और समय के परस्पर क्रियाशील पैमानों में स्थित करने की आवश्यकता को उजागर करते हैं। मानव–पर्यावरण भूगोल आधुनिक मानव समाजों, राजनीतिक अर्थव्यवस्थाओं, पर्यावरणवाद और पर्यावरण आंदोलनों के साथ अंतःक्रियाओं और उलझनों पर केंद्रित दृष्टिकोण से परिवर्तन के जैव–भौतिकीय तत्वों पर केंद्रित है। ऐसी ताकतें मानव–पर्यावरण अध्ययनों पर प्रमुख प्रत्यक्ष प्रभाव डालती हैं। मानव–पर्यावरण अध्ययनों की गतिशीलता ने भूगोल के समकालीन अनुशासन में इसे व्यापक रूप से महत्वपूर्ण मान्यता प्रदान की है। सामान्य तौर पर, दो अनुशासनात्मक संरचनाएँ प्रबल होती हैं। पहला है मानव–पर्यावरण भूगोल को मानव भूगोल और भौतिक भूगोल की कंकाल अनुशासनात्मक संरचना में एक प्रकार के अतिव्यापी संयोजी ऊतक के रूप में देखना। मानव–पर्यावरण भूगोल का यह उपचार एक ऐसे ढाँचे पर निर्भर करता है जिसमें प्रकृति सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक गतिशीलता (मानव भूगोल के मामले में) के विश्लेषण के लिए पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करती है या एक प्रकार की ट्रिगरिंग रिलीज के रूप में कार्य करती है जो पर्यावरणीय प्रणालियों की गतिशीलता पर प्रभाव उत्पन्न करती है (भौतिक भूगोल के मामले में) अनुशासनात्मक विन्यास के दूसरे प्रमुख मोड में मानव–पर्यावरण भूगोल का उपचार जिसे प्रकृति–समाज भूगोल के समानार्थी के रूप में प्रयोग किया जाता है (जिमरर) अनुशासन के चार–क्षेत्र या पाँच–क्षेत्रीय ढांचे के प्रमुख और असतत मूल के रूप में स्थित है। उदाहरण के लिए, चार–क्षेत्रीय ढांचा मानव–पर्यावरण भूगोल (या प्रकृति–समाज भूगोल जैसा कि इसे कभी–कभी कहा जाता है) को भौतिक भूगोल, मानव भूगोल और जीआई साइंस के साथ जोड़ता है, जिसमें अंतिम उल्लेखित मानचित्रण और विजुअलाइजेशन शामिल हैं। अनुशासन के लिए लागू किया गया पाँच–क्षेत्रीय दृष्टिकोण भी मानव भूगोल को कई उपश्रेणियों में फैलाता है जिसमें आर्थिक भूगोल और क्षेत्रीय विकास शामिल हैं। जबकि अनुशासनात्मक विन्यास के उपर्युक्त मोड अलग–अलग हैं यह प्रवृत्ति, जो कट्टरपंथी अंतर–अनुशासनात्मकता तक भी विस्तारित है,समकालीन भूगोल में विविध उपक्रमों के भीतर मानव–पर्यावरण अंतःक्रियाओं और प्रकृति–समाज संबंधों की प्रमुख भूमिका को पहचानती है (जिमरर 2007) चाहे इसे सीमावर्ती क्षेत्रों या अंतर्निहितता के रूप में देखा जाए, मानव–पर्यावरण अध्ययनों का बौद्धिक स्थान वर्तमान भूगोल के कई अत्यधिक सक्रिय क्षेत्रों में सिनैप्स को सक्षम बनाता है कुल मिलाकर, बौद्धिक विविधीकरण की ओर एक प्रवृत्ति मानव–पर्यावरण भूगोल की वर्तमान स्थिति की विशेषता है। यह विविधीकरण मानव–पर्यावरण भूगोल में विचार के क्षेत्रों में बहु–स्ट्रैंड शाखाओं और परिवर्तनों के सामान्य पैटर्न को दर्शाता है, हालांकि वर्तमान में एक या छोटी संख्या में प्रमुख प्रतिमानों की अनुपस्थिति में। इसके विपरीत, मानव–पर्यावरण भूगोल के इतिहास का अधिकांश हिस्सा पहले से ही प्रमुख प्रतिमानों के अस्तित्व से अलग था। सांस्कृतिक पारिस्थितिकी और मानव पारिस्थितिकी के चित्रण, जो 1960 और 1970 के दशक में लोकप्रिय हुए, भूगोल के साथ–साथ अन्य विषयों और अंतःविषय क्षेत्रों के संदर्भ में विकसित और विविधतापूर्ण होते रहे हैं। सांस्कृतिक पारिस्थितिकी का उपयोग अब मानव–पर्यावरण अध्ययनों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जिसमें सांस्कृतिक अध्ययनों का एक महत्वपूर्ण घटक होता है, जैसा कि डूलिटल, हेड, नैप, मैथ्यूसन और अन्य के कार्यों में हैय मानव पारिस्थितिकी मानव–पर्यावरण अंतःक्रियाओं के सिस्टम–आधारित दृष्टिकोण पर केंद्रित है। ब्रश, बटजर, मोरन और अन्य के कार्य मानव पारिस्थितिकी की वंशावली और वर्तमान उपयोग को चित्रित करते हैं। जैसा कि नीचे उल्लेख किया

गया है, सांस्कृतिक पारिस्थितिकी और मानव पारिस्थितिकी की ताकत ने बाद में सामाजिक–पारिस्थितिकी जैसे प्रमुख मानव–पर्यावरण दृष्टिकोणों के उदय को बढ़ावा दिया भूगोल के बाहर दोनों क्षेत्रों के साथ–साथ अनुशासनात्मक विवरणों के प्रभाव के परिणा मस्वरूप पकड़ बनाई है। नतीजतन, भूगोल में मानव–पर्यावरण अध्ययन को अन्य विषयों और अंतःविषय क्षेत्रों में अत्याधुनिक विकास के साथ निकटता से संबंधित माना जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, मानव–पर्यावरण भूगोल का व्यापक अंतःविषय आयाम अमेरिकी भूगोल को अंतःविषय अनुशासन के रूप में सुझाए गए पुनर्निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। यह सुझाव भूगोल की अनुशासन–आधारित अखंडता को मजबूत करने के विचार के इर्द–गिर्द घूमता है जबकि इसकी अंतःविषय कनेक्टिविटी पर जोर देता है। विशिष्ट पेशेवरों और विपक्षों के साथ–साथ सामान्य व्यवहार्यता को छोड़कर, यह सुझाव मानव–पर्यावरण अध्ययन की अत्यधिक अंतःविषय प्रकृति को रेखांकित करने के संबंध में महत्वपूर्ण है। मानव–पर्यावरण भूगोल की अंतःविषयता के उच्च स्तर के महत्वपूर्ण समानताएं पारिस्थितिकी, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, विज्ञान, पुरातत्व, इतिहास, राजनीति विज्ञान और परिदृश्य वास्तुकला के संबंधित क्षेत्रों में भी पाई जाती हैं। अन्य मानव–पर्यावरण क्षेत्रों पर आधारित प्रमुख कार्यों के सक्रिय लेखकों में शामिल हैं बेल्स्की, बेस्की, बिलिंग, ब्लेश, ब्रोंडीजियो, ब्रोसियस, केरी, क्लार्क, कोलिन्स, क्रेब, क्रोनन, कर्रान, डोव, डरहम, एस्कोबार, फिशर, फिशर–कोवलस्की, फोले, फ्रीडमैन, गोल्डमैन और शूरमैन, ग्रू, हिनरिक्स, इंगोल्ड, इरविन, किर्च, क्लॉपेनबर्ग, लैंगस्टन, लूज, जे. लियू, मैकमाइकल, मैट्सन, मिटमैन, मोरन, मॉरिसन, नाडास्डी, नाजारेआ, नेल्सन, पैडोच, पेलुसो, पेर्ज, प्लीनिंगर, रोहेड्स, टी. रॉबर्ट्स, रुडेल, ए. सैक्स, सैटो, स्कोनस, स्टेडमैन, टकर और आर. व्हाइट। मानव–पर्यावरण भूगोल के लिए महत्वपूर्ण कुछ प्रमुख अंतःविषय क्षेत्र पारिस्थितिकी और समाज पहल, पर्यावरण अध्ययन, पर्यावरण विज्ञान, विकास अध्ययन, खाद्य अध्ययन, वैश्विक अध्ययन, शहरी अध्ययन और शहरीकरण विज्ञान, और जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण और संरक्षण जीव विज्ञान, मानव पारिस्थितिकी, सामाजिक पारिस्थितिकी, राजनीतिक पारिस्थितिकी, और पर्यावरण नीति और प्रबंधन पर केंद्रित कार्यक्रम हैं, मानव–पर्यावरण भूगोल की सफल अंतःविषयता के प्रमुख उदाहरणों में ऊपर वर्णित कई दृष्टिकोण शामिल हैं – जैसे कि स्थिरता, सामाजिक–पारिस्थितिक प्रणाली, भेद्यता और लचीलापन, भूमि प्रणाली और युग्मित प्राकृतिक–मानव प्रणाली विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करने वाले। इन अंतःविषयक मानव–पर्यावरण डोमेन में सक्रिय और प्रभावशाली भौगोलिक लेखकों में शामिल हैं एडगर, एस्पिनॉल, बैसेट, बेबिंगटन, ब्रैनस्ट्रोम, डी. ब्राउन, के. ब्राउन, चौधरी, कूम्स, कटर, डेफ्रीज, ईकिन, इवांस, हासे, होस्टर्ट, कास्पर्सन, केट्स, क्रेट्जमैन, कुमेरले, लिवरमैन, लैम्बिन, मैकस्वीनी, मर्टज, मोसली, मुनरो, राडेल, रीनबर्ग, सेटो, साउथवर्थ, त्वाकर्ट, बी.एल. टर्नर II एम. टर्नर, वडजुनेक, वॉकर, वॉल्श, विलबैंक, यंग और जिम्मरर, तथा कई अन्य। भूगोल और अन्य क्षेत्रों की पत्रिकाओं के अलावा, यह कार्य उच्च प्रभाव वाली विज्ञान पत्रिकाओं जैसे कि नेचर, साइंस और यूएस प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (PNAS) के साथ–साथ मानव–पर्यावरण संबंधों पर केंद्रीय जोर देने वाली अन्य अंतःविषय पत्रिकाओं जैसे कि ग्लोबल एनवायरनमेंटल चेंज, एनुअल रिव्यू ऑफ एनवायरनमेंट एंड रिसोर्सेज, सोसाइटी एंड नेचुरल रिसोर्सेज, रीजनल एनवायरनमेंटल चेंज और इकोलॉजिकल एप्लीकेशन में भी दिखाई देते हैं। इन पिछले विकासों के साथ–साथ नई अंतर्दृष्टि अब मानव–पर्यावरण भूगोल से संबंधित स्पष्ट अंतःविषयता की चुनौतियों और संभावित ट्रेडऑफ को संबोधित कर रही है। एक संभावित ट्रेडऑफ अनुशासन के भीतर एक केंद्र के रूप में मानव–पर्यावरण भूगोल की एकजुटता का क्षीणन है। ऐसे संभावित ट्रेडऑफ की चर्चा भूगोल के साथ–साथ अन्य विषयों जैसे कि नृविज्ञान में भी

महत्वपूर्ण हो गई है, जहाँ अंतःविषयता स्वयं अनुशासन के लिए महत्वपूर्ण और अभिन्न हो गई है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानव–पर्यावरण भूगोल पर अंतःविषयता का प्रभाव, सामान्य रूप से भूगोल के अनुशासन के साथ, सीमा और डिग्री में काफी भिन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, जहाँ भूगोल एक छोटे से मध्यम आकार का अनुशासन है, मानव–पर्यावरण अध्ययनों में अंतःविषय प्रभाव प्रचलित हैं। इन प्रभावों में राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद की भूमिका और 1997 और 2010 में भूगोल पर इसकी प्रमुख रिपोर्टें शामिल हैं। ब्रिटेन में अंतःविषयता की एक कम डिग्री होती है जहाँ भूगोल का अनुशासन काफी बड़ा और मजबूत है, और इसलिए मानव–पर्यावरण अध्ययनों में अंतःविषयता पर अधिक हद तक निर्भर हो सकता है। यूरोप, एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के विविध देशों में पर्यावरण अंतःविषयता और अंतःविषयता की सापेक्ष सीमाएँ भी भिन्न हो गई हैं। भूगोल और अन्य क्षेत्रों के अनुशासन में मानव–पर्यावरण अध्ययनों की समझ के लिए निरंतरता और स्थायी प्रभाव भी महत्वपूर्ण बने हुए हैं। निरंतरता के इस विषय का उपयोग प्रभावशाली विरासतों को उजागर करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में किया जा सकता है।

इस तरह के काम सामाजिक अभिनेताओं और संस्थाओं के व्यवहार और बहुस्तरीय नेटवर्क को शामिल करने वाली प्रक्रियाओं के रूप में भेद्यता, खतरों और जोखिमों के बारे में एक दृष्टिकोण स्थापित करते हैं। साथ ही, जलवायु–संचालित प्रभावों जैसे पर्यावरणीय झटके, अनुकूली क्षमताओं के उपयोग को जन्म दे सकते हैं, जिससे मानव–पर्यावरण अंतःक्रियाओं में जुटाई गई संस्थागत क्षमताएँ महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक लाभ उत्पन्न कर सकती हैं, जैसा कि 1998 में तूफान मिच के बाद मध्य अमेरिका में कुछ वन–निवासी छोटे भूमि उपयोगकर्ताओं के मामले में हुआ था (मैकस्वीनी) समान रूप से महत्वपूर्ण, भेद्यता के पीछे सामाजिक परिस्थितियाँ और शक्ति की गतिशीलता राजनीतिक पारिस्थितिकी के व्यापक उपयोग की ओर ले जाती है (मुस्तफा), इन प्रक्रियाओं और स्थानिक पैटर्न में सामाजिक षविजेता और हारने वालेष जैसे मुद्दों पर ध्यान देने के साथ। मानव–पर्यावरण भूगोल के इस सामयिक और विषयगत क्षेत्र में अन्य प्रमुख लेखकों में एडगर, बार्न्स, बिरकेनहोल्ट्ज, कटर, डाउनिंग, ईकिन, क्रुगर, लीचेंको, लिवरमैन, मोंटज और टोबिन, मर्टज, मोर्टिमोर, ओश्ब्रायन, पोल्स्की, रिबोट, स्मिट, त्सचर्ट और बी.एल. टर्नर II शामिल हैं। यह क्षेत्र विभिन्न अंतःविषय क्षेत्रों से घनिष्ठ संबंध दर्शाता है। भूमि उपयोग, भूमि प्रणाली, भूमि परिवर्तन और जैव विविधता यह सामयिक और विषयगत क्षेत्र आज तक वनस्पति आवरण, मुख्य रूप से जंगलों और शहरी स्थानों के स्थानिक और लौकिक गुणों को शामिल करते हुए मानव–पर्यावरण गतिशीलता पर केंद्रित है। यह भूमि परिवर्तन विज्ञान से निकटता से जुड़ा हुआ है, जो मानव–पर्यावरण लेखकों जैसे एस्पिनॉल, डी. ब्राउन, चौधरी, क्रू–मेयर, डेफ्रीज, इवांस, होस्टर्ट, कुमेरले, लैम्बिन, मैनसन, मोरन, मुनरो, पार्कर, रीनबर्ग, रिंडफस, रुडेल, सेटो, बी.एल. टर्नर II वर्बर्ग और वॉल्श द्वारा अंतःविषय वैज्ञानिक साहित्य में प्रभावशाली परिभाषाओं और वैचारिक रूपरेखा–निर्माण का विषय रहा है। पद्धतिगत रूप से यह फोकस क्षेत्र दूर से संवेदी इमेजरी, भूमि उपयोगकर्ताओं के सर्वेक्षण और जनगणना डेटा के संयोजन का व्यापक उपयोग करता है। वनस्पति आवरण के प्रमुख बदलावों के अवलोकन को स्थानिक भूमि–उपयोग प्रणालियों (कभी–कभी भूमि प्रणालियों के रूप में संदर्भित) और भूमि–आवरण परिवर्तन के संदर्भ में माना जाता है। अब तक काफी ध्यान और अंतर्दृष्टि वनों की कटाई की उलझी हुई स्थानिक और सामाजिक–आर्थिक प्रक्रियाओं पर केंद्रित रही है, जिसमें चारागाह और कृषि में रूपांतरण, साथ ही तथाकथित द्वितीयक वन संक्रमणों के माध्यम से वनों का पुनः विकास शामिल है।

निष्कर्ष, मानवीय–पर्यावरण, पारिस्थितिक तंत्र को शामिल करने वाले तरीकों के बढ़ते उपयोग के साथ वे भविष्य में काफी आशाजनक हैं। आजीविका और कृषि परिदृश्य यह सामयिक और विषयगत क्षेत्र आंशिक रूप से अंशकालिक भूमि उपयोग में वैश्विक पैमाने पर बदलाव और 2.0–2.5 बिलियन छोटे किसानों के बीच विविध आजीविका के महत्व के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुआ है, जो सामाजिक–आर्थिक और पर्यावरणीय स्थितियों में बड़े बहुस्तरीय परिवर्तनों के बीच खाद्य उत्पादन में संलग्न रहना जारी रखते हैं। कृषि–खाद्य परिदृश्य और कृषि–खाद्य प्रणालियों पर जोर आंशिक रूप से इस तथ्य के कारण है एक अन्य महत्वपूर्ण फोकस में शहरीकरण, आजीविका विविधीकरण और भूमि उपयोग पर विकास की बढ़ती भूमिकाओं का व्यापक अनुभवजन्य विश्लेषण और समझ शामिल है। यह चालक कृषि, भोजन और मानव जनित वनों के आवरण से जुड़े जटिल मानव–पर्यावरण संबंधों को जन्म देते हैं। विविध आजीविका, जिसमें विशाल पेरी–शहरी परिधि और नई ग्रामीणता (जिसे ग्रामीण इलाकों में आजीविका विविधीकरण, शहरी कनेक्शन और उपभोक्ता आर्थिक मूल्यों की प्रबलता के रूप में परिभाषित किया गया है) की घटना शामिल है, अब सीधे तौर पर भू–दृश्यों के बड़े हिस्से को प्रभावित करती है और दुनिया की अधिकांश आबादी की आजीविका को प्रभावित करती है। नवउदारवादी वैश्वीकरण के तहत उत्पाद और श्रम बाजारों के साथ एकीकरण, जिसमें व्यापक अनौपचारिक क्षेत्रों और शहरी/पेरी–शहरी क्षेत्रों का निर्माण शामिल है, विकास, पेरी–शहरी स्थानों और नई ग्रामीणता के प्रभावों की कई मानव–पर्यावरण गतिशीलता को संचालित करता है (कार्नी) दुनिया के 2.0–2.5 बिलियन छोटे भूमि उपयोगकर्ता बड़े कॉर्पोरेट औद्योगिक कृषि के समान ही महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, वैकल्पिक और स्थानीय खाद्य नेटवर्क का उदय विभिन्न प्रकार के स्थानों में संभावित रूप से नवीन कृषि–खाद्य प्रणालियों और परिदृश्यों को जन्म दे रहा है। ये नेटवर्क मिट्टी के पोषक तत्वों, खाद्य और वुडलैंड जैव विविधता और खेत वुडलैंड्स जैसे पर्यावरणीय कारकों के प्रबंधन में कृषि और खाद्य परिदृश्यों पर स्थिरता बढ़ाने वाला प्रभाव डाल सकते हैं। इस तरह के मानव–पर्यावरण इंटरैक्शन वर्तमान में मानव–पर्यावरण भूगोल में विकसित और बहस किए जा रहे नए शोध और समझ की एक प्रमुख प्राथमिकता हैं। इस उपखंड में अब तक शामिल विषयों और विषयों पर प्रमुख मानव–पर्यावरण कार्यों के लेखकों में बेकर, बैसेट, बेबिंगटन, कार्नी, डेनेवन, डूलिटल, गाल्ट, एल। ग्रे, हेच, हेडबर्ग, लर्नर, मैकमाइकल, मोसली, प्राइस शामिल हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- बैसेट, थॉमस जे 2013. जलवायु परिवर्तन साहित्य में अनुकूलन अवधारणा।" जियोफोरम, 48: 42–53A
- बेमर–फैरिस, 2012. "लचीलेपन की सोच में अनुकूली प्रबंधन के वादे और नुकसान राजनीतिक पारिस्थितिकी का लेंस।" लचीलापन और सांस्कृतिक परिदृश्य में मानव–आकार के वातावरण में परिवर्तन को समझना और प्रबंधित करना, टोबियास प्लीनिंगर और क्लाउडिया बीलिंग द्वारा संपादित, 283–299A कैम्ब्रिज कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- बटजर, कार्ल 2012. ऐतिहासिक पतन पर महत्वपूर्ण दृष्टिकोण। नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज की कार्यवाही, 109: 3628–3631A
- कार्नी, जूडिथ ए. 2008. गैम्बियन चावल नीतियों की कड़वी फसल। वैश्वीकरण, 5: 129–142

- कार्टर, एरिक डी. 2014. टेनेसी वैली अथॉरिटी में मलेरिया नियंत्रण स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी और विकास के मेटानेरेटिव्स। जर्नल ऑफ हिस्टोरिकल जियोग्राफी, 43: 111–127।
- कैस्ट्री, नोएल, 2009. नोएल कैस्ट्री, डेविड डेमेरिट, डायना लिवरमैन और रूस रोड्स द्वारा संपादित, ए कम्पैनियन टू एनवायर्नमेंटल ज्योग्राफी में, 1–16. माल्डेन, एमए ब्लैकवेल. कूम्स, ओलिवर टी.